बात समझ में आई... कविता

मैं दौड़ रही थी आंगन में
लेकर एक खिलौना।
बाबा बैठे, दादी बैठी
लेकर एक बिछौना।
माँ मेरी बैठी आंगन में
था वो एक छोटा-सा कोना।

दादी डांट लगा रही
न उछलो, न कूदो तुम
बाबा मेरे समझाते मुझे
न ऐसे दौड़ो तुम।

माँ मुझे अपलक निहार रही
मुस्काकर देती वथा खिलौना।
आंगन में मैं फिसल गई
आया बहुत ही रोना।

दादी डांटे, बाबा डांटे
भैया ने भी खला दिया।
दौड़ी-दौड़ी आई मां
सीने से मुझे लगा लिया।

ओ मेरी राजकुमारी
ओ मेरी गुड़िया प्यारी
तुझे चोट तो न आई
बात दे ओ दुलारी।

पलकें मां की भीगी थीं
आंख मेरी भी भर आई
मां के जैसा ना दूजा कोई
बात समझ में आई।

नाम:- प्रीती Preeti